Vol 6 Issue 6 Dec 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

GRT **Golden Research Thoughts**

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | December - 2016

मन्नू भण्डारी की कहानियों में मूल्य के बोध

प्रा. श्रीमती पोटकुले एच.टी.
हिंदी विभाग,कला व विज्ञान महाविद्यालय,शिवाजीनगर गढी,ता,गेवराई,जि,बीड.

प्रस्तावना :

किसी भी साहित्य का विचार करते समय सबसे पहले हमारे सम्मुख मूल्यों का प्रश्न उपस्थित होता है। किसी भी रचना का महत्व उसमें निहित मूल्यों के आधार पर ही कर सकते है। वास्तव में ‘मूल्य’ समाज के जीवन में सामाजिक, धार्मिक, और नैतिक पृष्ठभूमी के लिए एक ऐसी वैचारीक इकाई है,जिसका विकास व्यक्ती से समाज की और से होता है। उसके साथ हमारा मानसिक संबंध स्थापित हो जाता है। जिसके आधार पर हम औचित्य,अनौचित्य का निर्णय करते है और जिसका अनुसरन करते हूए समाज का जीवन व्यवस्थित रुप से चलता है और हम सुख का अनुभव करते है ।मानव की सामाजिक जीवन जीने की इच्छा उसकी उस समष्टि हित भावना को व्यक्त करती है जिसमें सभ्यता और संस्कृती विकसित होती है। सभ्यता और संस्कृती ही मानव मूल्यों की संपोषक एंव संवर्धक है ।सृजनशील चेतना के नए-नए आयाम उद्घाटीत करते हूए मानव कल्याण एंव आत्मोपलब्धि का मार्ग प्रशस्त करते है ।ये मूल्य ही मानवीय उपलब्धियो के विविध रुप,धर्म,दर्शन,कला,साहित्य आदि में व्यवहृत होते है जो समाज,राष्ट्र एवं आंतरराष्ट्रीय क्षेत्रो तक फैले हूए है।

वर्तमान आधुनिक युग बडी तीव्रता से परिवर्तित हो रहा है जिसमें परंपरागत एंव नवीन मूल्यों में टकराव,संघर्ष एंव संक्रमणशीलता दिखायी देती है। मनुष्य के भौतिक साधनो के प्रति आसक्ति एंव बढते हूए पूंजीवाद ने एक नयी अर्थ संस्कृती को जन्म दिया है ।परिणामतः स्वातंत्रोत्तर दौर में वैज्ञानिक एंव औद्योगिक प्रगति के कारण परिवर्तित परिस्थितियों के अंतर्गत अस्तित्ववाद,फ्रायडवाद और मार्क्सवाद आदि पाश्चात्य चिंतन ने भारतीय पारिवारिक,सामाजिक,आर्थिक एंव सांस्कृतिक मूल्यों को प्रभावित एंव परिवर्तित किया है। हिंदी कहानी साहित्य की एक सशक्त एंव महत्वपूर्ण विधा होने के कारण स्वातंत्रोत्तर हिंदी कहानी ने स्वातंत्रोत्तर परिवर्तित राष्ट्रीय,सामाजिक,सांस्कृतिक और आंतरराष्ट्रीय परिवेश में व्याप्त मूल्य बोध को अत्यंत सहजता और परिवेशगत यथार्थ के साथ अभिव्यंजित किया है ।कहानी को नयी दिशा देनेवाली नारी कथाकारो में मन्नू भण्डारी जी का स्थान प्रथम पंक्ति में है। मन्नू जी की कहानियाँ जीवन के विविध क्षेत्रो से जूडी संवेदनशील एंव गहराई तक पहूचने वाली कहानियाँ है ।और यही विशेषता उन्हें अन्य नारी लेखिकाओं से विशिष्ट होने का गौरव प्रदान करती है।

मन्नू भण्डारी की कहानियाँ जीवन से जुडी कहानियाँ है। स्वयं लेखिका का कथन है,कि ‘‘जीवन की धडकन से भरपूर स्थितियाँ,विचार या समस्याएँ ही मुझे लिखने के लिए प्रेरित करती है।‘‘ मन्नू जी ने कहानियों के साथ साथ उपन्यास, नाटक, किशोरोपयोगी साहित्य,एंव फिल्मों के लिए भी लिखा है ।उनकी कहानी ‘यही सच है’पर एक फिल्म ‘रजनी-गंधा भी बन चूकी है।

पारिवारिक मूल्य :-

स्वातंत्रोत्तर काल में विशेष रुप से साठोत्तरी काल में तीव्र गती से भारत में औद्योगिक और भौतिक विकास हूआ है ।उसी के प्रभाव से मानवीय संबधों के मूल में उतनी ही जटीलताएँ उत्पन्न हो गयी है ।संयुक्त परिवार के सभी सदस्य आपसी स्नेह भाव कों कोमल डोर में बंधे रखते थे ।इसिलिए अपाहिज,उपेक्षित,अनाथ सदस्य दया,करुणा,स्नेह आदि उदात्त मूल्यों पर दृढ विश्वास होने के कारण सुरक्षा एंव अपनत्व प्राप्त करते थे परंतु वर्तमान स्थिति में आत्मकेंद्रित एंव स्वार्थी भावनाओं ने मनुष्य में निहित दया,करुणा,बंधुत्व आदि मूल्यों का ह्रास हूआ है। पारिवारिक मूल्यों में अंतर्गत ममता,स्नेह,प्रेम वात्सल्य, सहानुभूती, उदारता, बंधुता, साहचार्य,आत्मीयता,विश्वास,एकनिष्ठता,त्याग समर्पण आदि विविध कुप्रवृतियो ने पारिवारिक मूल्यों को तोड दिया है इसिलिए वर्तमान युग में संयुक्त परिवार तो क्या एकल परिवार भी टूटने लगे है। इसकी अभिव्यक्ती ‘एखाने आकाश नाई’कहानी में दिखाई देता है। चाची के कथन से ये बात स्पष्ट होती है-‘‘मकान के इस हिस्से के सिवा मेरे पास तो कुछ भी नही,हिस्से का थोडा बढा पैसा है पर सब दबा लिया। मांगती हूँ तो सबको काटे जैसी लगती हूँ।’’

एक समय था पिता अपनी संतानो के सामने झूठ का साथ न देने का और सच्चाई का साथ चलने का आदर्श रखते थे इसिलिए चापलूसी, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी को हेय समझा जाता था परन्तु वर्तमान युग में आम आदमी को आर्थिक समस्या ने घेर लिया है,साथ ही साथ सिफारिश के बिना किसी भी क्षेत्र में अपना काम नही कर सकता जिससे सत्य,विश्वास आदि मूल्य टूटने लगे। इसकी अभिव्यक्ती मन्नू जी ने ‘क्षय’,‘नशा’,‘आदते’,कहानियों में की है।

मूल्य संघर्ष का प्रभाव मनुष्य के आत्मिक,पारिवारिक,संबंधो पे पडा। आज मानवीय रिश्ते उसी रुप में मान्य नही रहे जैसे पहले

थे। मानवीय संवेदना पर अर्थ का स्वार्थ हानी होकर बहूत सारे आत्मिक संबंधो को बेमतलब का बोझ ढोने की रस्म से बना रहा है। माँ-बाप,पिता-पुत्र,पुत्री,माँ-बहन,पती-पत्नी,भाई-भाई आदि के बीच अनाम दुरीयाँ आ गयी जिसके कारण ये संबंध दरकने लगे। आज व्यक्ती के जीवन में एक प्रकार का संत्रास,अकेलापन,अजनबीपन का बोझ जागृत हूआ है। संबंधो की इस विसंगतीयो को मन्नूजी ने 'नशा',शायद,'रेत की दिवार',कहानियो में उद्घाटीत किया है।

विवाह से संबंधित मूल्यः–

आज समाज में नये-नये मूल्यों की क्रांती मची हूई है,पुराने मूल्यों पर संकट आता हूआ दिखाई देता है। आज विज्ञान पर लोग विश्वास रखने लगे है। रुढीगत मान्यताओं का महत्व कम होता जा रहा है,प्राचीन काल में विवाह संस्था की पवित्रता स्विकार की गयी थी,अंतः विवाह समाज में महत्वपूर्ण मूल्य के रुप में स्विकृत था। लेकिन आज विवाह के बंधन शिथिल होने लगे,विवाह विच्छेद को इतना बुरा नही माना जा रहा है मतलब यहाँ मूल्य परिवर्तन की प्रक्रिया समय के तकाजे के कारण है। आज विवाह का आधार प्रेम या भावात्मक संवेदना,युग-युग के संबंधो की आस्था या विश्वास नही है अपितु उसे मात्र एक सामाजिक समझोता,साथ रहने की आवश्यकता समझा गया है। विवाह के साथ जुडी प्रामाणिकता,पुर्व पवित्रता आदि बाते वर्तमान समाज के संदर्भ में बिलकुल बकवास लगती है। मन्नूजी की 'उंचाई'कहानी में विवाह एंव शारिरीक पवित्रता संबंधी परिवर्तित मूल्य इस बात का स्पष्ट संकेत देती है।शिवानी पती शिशिर से प्रेम करते हूए भी अपने पूर्व प्रेमी अतुल को शरीर सौपने में कही पर भी नैतिक मूल्य खंड कर देने का अपराध उसमें नही है।वह इस बात का समर्थन इन शब्दो में करती है-''शरीर पर चाहे अतुल छाया हो पर मन में केवल तुम छाए हो किसी के कितनी ही निकट चली जाऊँ,चाहे शारिरीक संबंध भी स्थापित कर लूँ पर मन की जिस ऊँचाई पर तुम्हें बिठा रखा है,वहा काई नही आ सकता''।[२] यहा लेखिकाने परिवर्तित मूल्य दृष्टी का संकेत दिया है। समाज में स्थापित मूल्य पूर्णतः भंग नही हो सकते तो समय और परिवेश के अनुसार सिर्फ परिवर्तन उनमें होता है। मन्नू जी ने 'बंद दरवाजे के साथ','चश्मे','कोई तिसरा'कहानियो में विवाह मूल्य में परिवेश के कारण उत्पन्न परिवर्तन और टूटे दामपत्य संबंधो में तलाक की स्थिति का उद्घाटीत किया है।

सामाजिक मूल्यः–

परिवार,समाज कि महत्वपूर्ण इकाई है,परिवार का प्रत्येक सदस्य पूरे समाज का महत्वपूर्ण अंग है। वर्तमान युग में नयी पिढी के रहन-सहन,सोच-विचार,आदि में व्यापक परिवर्तन दिखाई देता है जो पुरानी पीढी के दृष्टीकोन से सवर्था भिन्न है।नयी पुरानी पीढी के दृष्टीकोन में मूल्यगत टकराव के कारण व्याव्हारिक और वैचारीक मतभेद है। पारिवारिक विघटन के कारण ''पिता आदरणीय और अनुभवी आदमी का ही प्रतिक नही रहा। परंपरा गौरव की वस्तु नही रही,विश्वास अर्थहीन हो गया,बहन और भाई का रिश्ता राखी का नही रह गया।आदमी और औरत का समर्पण का संबंध ही बदल गया''।[३]

नारी का शिक्षित होकर आर्थिक दृष्टी से स्वावलंबी बनने और वैयक्तिक स्वतंत्रता और अस्तित्व के भावना के कारण भी परंपरागत पारिवारीक मूल्य परिवर्तित हूए है। इसके अस्तित्व अपने पारिवारीक उत्तरदायित्वों को निभाने की चेष्टा में नारी की वैयक्तिक इच्छाएँ और भावनाएँ भी आहत हूई है। मन्नूजी 'क्षय'कहानी में परिवर्तित पारिवारीक मूल्य परिवर्तन के कारण घुटन के पीढा में कसमसाती नारी का चित्रण है।'बंद दराजों के साथ'नगर संबंधी मूल्य विघटन कि पारिवारीक स्तर की चर्चा अधिक मिलती है। नगरीय एंव महानगरीय पारिवारीक संबंधो में परंपरागत मूल्य-मर्यादा विछिन्न हूई है। बढती मँहगाई,महत्वकांक्षाएँ और भौतिक मूल्य के प्रति आस्तक्ति के कारण पारिवारीक मूल्य-बोध नये रुप से उभरे है वही स्थिती विवाह एंव प्रेम के क्षेत्र में दिखाई देती है।

आर्थिक मूल्यः–

आर्थिक मूल्य अर्थ केंद्रित समाज में जन-जीवन के चढ-उतार का कारण होता है।आज अर्थ व्यक्ति तथा समााज के विकास का मेरुदण्ड बन गया।

भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए अर्थ आवश्यक साधन है। धनसंचय के भौतिकवादी दृष्टीकोन ने सामाजिक मूल्यों का विघटन किया है।जिससे समाज में भ्रष्टाचार,रिश्वतखोरी बेईमानी का प्रसार हुआ,यहा तक की इससे न्याय तंत्र भी प्रभावित हूए बिना नही रह सका। मन्नू जी की 'सजा'नैतिक मूल्यों को प्रभावी होने को चित्रित करती है जहाँ''आज के जमाने में तो गुन्हेगार अपने को साफ बचाकर ले जाते है,लाखो हजम करके मूछों पर ताव देते घुमते है। फाइलें की फाइलें गायब करवा देते है।''[४]निश्चय ही ऐसा भयावह भ्रष्टा स्थिति से इमानदारी और नैतिक मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह लगाया जाना स्वाभाविक है।

अर्थ के कारण खून के रिश्ते भी मूह मोढ लेते है,बाह्य व्यवस्था के साथ आंतरिक पारिवारिक व्यवस्था पर भी 'अर्थ'असर करता है।आर्थिक मूल्य परिवर्तन के परिणाम स्वरुप आत्मीय संबंधो में निर्माण हूई दरार का वर्णन मन्नू जी की 'इन्कम टैक्स और नींद',नकली हिरे','एखाने आकाश नाई'कहानियो में तो आत्मीय संबंधो में अर्थ मूल्य ने किस प्रकार दरार निर्माण की है उसका वर्णन किया गया है।जीवन की विभिन्न समस्याएँ जटिलतर हो जाने से और अर्थमूलक संस्कृति के उदय से व्यक्ती में अर्थ संचय की प्रवृत्ती प्रबल होती है।जिसके परिणाम स्वरुप मानव संबंधो में बिखराव और अलगाव की स्थिती उत्पन्न हो रही है। दया,ममता, करुणा,मातृत्व-पितृत्व,भातृत्व,त्याग,समर्पण आदि मूल्य विघटीत हो गये है।संवेदना एंव भावनाओं को कुचल दिया है।

आर्थिक संकट ने माता-पिता तथा संतान के पारस्परिक संबंधो को नया रुप दिया है।आर्थिक अभावग्रस्तता ने शिष्टाचार को बुरी तरह सोख लिया है।

नैतिक मूल्यः–

समाज,धर्म और राज्य द्वारा निर्मित नियमों के अनुकूल चलना ही नीती है और उन नियमों के अनुकूल आचारण से संबंधित मूल्य ही नैतिक मूल्य है। दया,त्याग,पवित्रता,सत्य आदि शाश्वत मूल्य को नैतिक मूल्य कहा जा सकता है।भारतीय समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति विशेष आदर रहा है। हमारे यहा आचरण की पवित्रता को अधिक महत्व दिया गया है नैतिकता का संबंध मानव के चरित्र और आचरण से होता है। समय परिवर्तन के साथ-साथ नैतिकता संबंधी मानदण्ड भी परिवर्तित होते रहते है।

आज के युग में विवाह विषयक नैतिक मूल्यों में भी परिवर्तन आ रहा है। कई सामाजिक मान्यताओ में आमूल परिवर्तन आया है,नयी विचार प्रणाली का सबसे पहला प्रभाव जाति प्रथा पर हूआ है। दहेज जैसी सामाजिक कुरितियो से मुक्ती पाने और भावात्मक एकता निर्माण

करने के लिए ''आंतरजातीय विवाह से वंशभेद,जातीभेद,प्रांतभेद,भाषाभेद आदिको मिटाकर राष्ट्रीय एकता की स्थापना में मदद मिल सकती है। इसमें आदमी के बीच दूरियों को कम किया जा सकता है'' ।५ विवाह मूल्य में आया परिवर्तन निश्चित ही सामाजिक स्वास्थ के लिए जरुरी है। सामाजिक नैतिकता की मान्यता ही विशेष रुप नर-नारी संबंधो और यौन नैतिकता के बारे में ही आग्रही है। आज पती -पत्नी संबंध टूटते नजर आ रहे है। सतीत्व और पतीव्रत्य की परंपरागत धारणाएँ टूटती जा रही है। मन्नू जी ने 'ऊँचाई' कहानी में पातिव्रत्य मूल्यों का ही बदलते संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास शिवानी के जरिए किया गया है। भारतीय समाज परंपरागत नैतिक मान्यताओ को तिलाजंली देकर नवीन मान्यताओ को अपना रहा है।

'शाश्वत मूल्य'सभ्यता का विकास की सबसे मूल्यवान उपलब्धि है। युगों-युगों मनुष्य ने त्याग,सत्य,दया,ममता आदि मूल्यो समान किया है। यही वे मूल्य है जो मनुष्य को पशुत्व की कोटी से उपर उटाते है और यही उसे देवत्व तक पहूँचाते है। मूल्यों का अस्तित्व समाप्त नही हूआ,समाप्त होगा भी नही क्योंकी जिस दिन मानव इन मूल्यो को खो देगा उस दिन उसका अपना व्यक्तित्व भी समाप्त हो जाएगा। सामाजिक,धार्मिक,और सांस्कृतिक स्तर पर मनुष्य के व्यव्हार में मूल्यहिनता आ गयी है,चिरंतन मूल्य-विक्षत हो रहे है। सामाजिक मूल्य परिवर्तन में विशेष रुप से परिवार,प्रेमविषयक धारणाएँ विवाह के अंतर्गत दामपत्य संबंधो में शाश्वत मूल्यों में भौतिकता,आधुनिकता नारी शिक्षा स्वतंत्रता की धारणाएँ आदि के परिणाम स्वरुप मूल्य परिवर्तन की अटलता,स्थिती,स्वरुप एंव शाश्वत मूल्यों को सुरक्षित रखने का प्रयास भी किया जा रहा है।इसका सुंदर अंकन लेखिका की कहानी में दिखाई देता है।

दो पिढीयो के बीच मूल्यो और मान्यताओ को लेकर मतभेद हमेशा से हो रहे है। परंतु वर्तमान आधुनिक युग में अधिक गहरायी से है। नयी पुरानी पिढी के बीच मूल्य संघर्षो की अभिव्यक्ती 'क्षय' कहानी में हूई है।पिता-पुत्री से सिफारिश करने के लिए कहता है पुत्री के मना करने पर पिता और भाई दोनो नाराज हो जाते है। 'नशा','इन्कमटैक्स और नींद'कहानी में नए पुराने मूल्यों का संघर्ष व्यक्त हूआ है। मानव जीवन में मूल्यों का महत्व निर्विवाद है। वस्तुतःमानव समाज मूल्यो का संगठन एंव संकलन है। मूल्यो के द्वारा ही मानव अपनी इच्छाओ,आकांक्षाओ,एंव आदर्शो को प्राप्त करता है।

उपसंहारः-

जीवन मूल्य के सहअस्तित्व के लिए जरुरी है परंतु आधुनिकता,पाश्चात्य विचार प्रणाली का प्रभाव तथा अंधानुकरण,आत्मकेंद्रित संकिर्ण मनोवृत्ती,आपसी स्वार्थ आदि ने वात्सल्य ममत्व और प्रेम इनसे संबंधित मुल्यों को प्रभावित किया है। जिसमें उनकी अर्थवत्ता धूमल हो गयी है। इन्ही उदात्त मूल्यो को मौलिक रुप से प्रस्थापित करना जरुरी है,यह सत्य लेखिकाने कहानियों द्वारा प्रतिपादित किया है।समय के बहाव में परिवर्तन की शक्ति 'परिवार संस्था'के कितना भी संचलित करती रहेगी तो भी भारतीय संस्कृति में निहीत 'बसुधैब कुटुंबकृम' की संकल्पना को वह किसी भी हालत में समाप्त नही कर सकती।

मनुष्य मूल्यो को अपनाएगा नही तो उसकी स्थिती उस आदि मानव जैसी होगी,जो दुसरो से छिनकर खाता था और जिसके लिए स्वार्थ ही सर्वोपरी वस्तु थी। मूल्य मानव समाज को एक उदात्तता प्रदान करते है। मानव इसिलिए मानव कहलाता है क्योंकि वह मूल्यों को अपने जीवन में महत्तवपूर्ण स्थान देता है।

संदभ ग्रंथ सूचीः-

१. मन्नूजी के तमाम रंग त्रिशंकु संग्रह पृ. १६
२. मन्नू भण्डारी-एखाने आकाश नाई-मेरी प्रिय कहानिया,पृ. ७४
३. मन्नू भण्डारी-एक प्लेट सैलाब-उँचाई पृ. १३६
४.कमलेश्वर-नयी कहानी की भूमिका पृ. १७०
५.मन्नू भण्डारी-यही सच है,पृ. ६१
६.डॉ रमेश देशमुख -आठवी दशक की हिंदी कहानी और जीवन मूल्य,पृ. १७८
७.डॉ वेद प्रकाश अमिताभ,डॉ रंजना शर्मा-नयी कहानी,प्रतिनिधी हस्ताक्षर .

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org